(सर्वाधिकार सुरक्षित)

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

निषेध नवति

रचयिता-

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ पूज्य श्री 105 क्षुल्लक मनोहर जी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक-

खेमचन्द जैन, सर्राफ

मन्त्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

185 ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ (उ. प्र.)

प्रथम संस्करण 1000] सन् 1976 [लागत 20 पैसे

मंगल-तन्त्र

ॐ नमः शुद्धाय, ॐ नमः चिदस्मि।
मैं ज्ञानमात्र हूँ, मेरे स्वरूप में अन्य का प्रवेश नहीं, अतः निर्भार हूँ।
मैं ज्ञानघन हूँ, मेरे स्वरूप में अपूर्णता नहीं, अतः कृतार्थ हूँ।
मैं सहज आनंदमय हूँ, मेरे स्वरूप में कष्ट नहीं, अतः स्वयं तृप्त हूँ।
ॐ नमः शुद्धाय, ॐ नमः चिदस्मि

आत्म-रमण

मैं दर्शनज्ञानस्वरूपी हूँ, मैं सहजानन्दस्वरूपी हूँ। ।।टेक।।
हूँ ज्ञानमात्र परभावशून्य, हूँ सहज ज्ञानघन स्वयं पूर्ण।
हूँ सत्य सहज आनंदधाम, मैं सहजा., मैं दर्शन. ।।1।।
मैं खुद का ही कर्ता भोक्ता, पर में मेरा कुछ काम नहीं।
पर का न प्रवेश न कार्य यहाँ, मैं सहजा. मैं दर्शन. ।।2।।
आऊं उतरूं रम लूँ निज में, निज की निज में दुविधा ही क्या।
निज अनुभव रस से सहज तृप्त, मैं सहजा., मैं दर्शन. ।।3।।

निषेध नवति

प्रवक्ता- अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री 105 क्षुल्लक **मनोहर जी वर्णी "सहजानन्द"महाराज**

(1)

निमित्त विकार को करता नहीं, निमित्त बिना विकार होता नहीं।

(2)

व्यवहार किये बिना सिद्धि नहीं, व्यवहार छोड़े बिना सिद्धि नहीं।

(3)

विकार निमित्त का नहीं, विकार उपादान का नहीं।

(4)

विकारोद्भव खुद से नहीं, विकारोद्भव पर से नहीं।

(5)

निश्चय से व्यवहार नहीं, व्यवहार से निश्चय नहीं।

(6)

द्रव्यलिंग बिना मोक्ष नहीं, द्रव्यलिंग से मोक्ष नहीं।

(7)

भावक बिना भाव्य नहीं, भावक से भाव्य नहीं।

(8)

ज्ञायक बिना ज्ञेय नहीं, ज्ञायक से ज्ञेय नहीं।

(9)

निमित्त बिना नैमित्तिक नहीं, निमित्त से नैमित्तिक नहीं।

(10)

सत्ता बिना कल्पना नहीं, कल्पना से सत्ता नहीं।

(11)

कल्पना बिना क्लेश नहीं, क्लेश बिना कल्पना नहीं।

(12)

मोह बिना संसार नहीं, संसार बिना मोह नहीं।

(13)

मोह बिना चोट नहीं, चोट बिना मोह नहीं।

(14)

छाया बिना माया नहीं, माया बिना छाया नहीं।

(15)

सामान्य बिना विशेष नहीं, विशेष बिना सामान्य नहीं।

(16)

व्यवहार बिना निश्चय नहीं, निश्चय बिना व्यवहार नहीं।

(17)

अस्ति बिना नास्ति नहीं, नास्ति बिना अस्ति नहीं।

(18)

पर्याय बिना द्रव्य नहीं, द्रव्य बिना पर्याय नहीं।

(19)

द्वैत बिना अद्वैत नहीं, अद्वैत बिना द्वैत नहीं।

(20)

उत्पाद बिना व्यय नहीं, व्यय बिना उत्पाद नहीं।

(21)

कर्ता बिना क्रिया नहीं, क्रिया बिना कर्ता नहीं।

(22)

श्रद्धान् बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना श्रद्धान् नहीं।

(23)

देश बिना भेष नहीं, भेष बिना देश नहीं।

(24)

बोध बिना शोध नहीं, शोध बिना बोध नहीं।

(25)

हिंसा बिना पाप नहीं, पाप बिना हिंसा नहीं।

(26)

माया बिना काया नहीं, काया बिना माया नहीं।

(27)

ध्यान बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना ध्यान नहीं।

(28)

खेल बिना मेल नहीं, मेल बिना खेल नहीं।

(29)

प्रभु बिना भक्त नहीं, भक्त बिना प्रभु नहीं।

(30)

मुनि बिना श्रावक नहीं, श्रावक बिना मुनि नहीं।

(31)

श्रोता बिना वक्ता नहीं, वक्ता बिना श्रोता नहीं।

(32)

ज्ञान बिना ज्ञेय नहीं, ज्ञेय बिना ज्ञान नहीं।

(33)

जीव बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना जीव नहीं।

(34)

रीति बिना नीति नहीं, नीति बिना रीति नहीं।

(35)

सर्व बिना एक नहीं, एक बिना सर्व नहीं।

(36)

ग्रन्थ बिना पंथ नहीं, पंथ बिना ग्रन्थ नहीं।

(37)

गीत बिना प्रीति नहीं, प्रीति बिना गीत नहीं।

(38)

भोग बिना रोग नहीं, रोग बिना भोग नहीं।

(39)

द्वन्द बिना फंद नहीं, फंद बिना द्वन्द नहीं।

(40)

राग बिना क्लेश नहीं, क्लेश बिना राग नहीं।

(41)

बाह्यदृष्टि बिना मलीमसता नहीं, मलीमसता बिना बाह्यदृष्टि नहीं।

(42)

बंध बिना उदय नहीं, उदय बिना बंध नहीं।

(43)

कारण बिना कार्य नहीं, कार्य बिना कारण नहीं।

(44)

अंशी बिना अंश नहीं, अंश बिना अंशी नहीं।

(45)

भक्ति बिना शक्ति नहीं, शक्ति बिना भक्ति नहीं।

(46)

संतोष बिना आनन्द नहीं, आनन्द बिना संतोष नहीं।

(47)

धीरता बिना वीरता नहीं, वीरता बिना धीरता नहीं।

(48)

भोग में आराम नहीं, आराम में भोग नहीं।

(49)

ज्ञान में मान नहीं, मान में ज्ञान नहीं।

(50)

विरोध बिना विवाद नहीं, विवाद बिना विरोध नहीं।

(51)

ज्ञान में विवाद नहीं, विवाद में ज्ञान नहीं।

(52)

प्रभुता में दोष नहीं, दोष में प्रभुता नहीं।

(53)

स्वरूप में विकार नहीं, विकार में स्वरूप नहीं।

(54)

बल में छल नहीं, छल में बल नहीं।

(55)

ज्ञान में राग नहीं, राग में ज्ञान नहीं।

(56)

कर्म में धर्म नहीं, धर्म में कर्म नहीं।

(57)

भेद में वस्तु नहीं, वस्तु में भेद नहीं।

(58)

एक की दो नहीं, दो की एक नहीं।

(59)

संग में सहज भाव नहीं, सहज भाव में संग नहीं।

(60)

ज्ञेय में ज्ञान नहीं, ज्ञान में ज्ञेय नहीं।

(61)

प्रीति में भीति नहीं, भीति में प्रीति नहीं।

(62)

अभूतार्थ बिना भूतार्थ नहीं, भूतार्थ बिना अभूतार्थ नहीं।

(63)

उपचार बिना प्रबोध नहीं, प्रबोध बिना उपचार नहीं।

(64)

ध्रौव्य बिना अध्रौव्य नहीं, अध्रौव्य बिना ध्रौव्य नहीं।

(65)

अशुद्ध बिना शुद्ध नहीं, शुद्ध बिना अशुद्ध नहीं।

(66)

एक बिना अनेक नहीं, अनेक बिना एक नहीं।

(67)

अन्वय बिना व्यतिरेक नहीं, व्यतिरेक बिना अन्वय नहीं।

(68)

दृष्टि बिना सृष्टि नहीं, सृष्टि बिना दृष्टि नहीं।

(69)

सत्त्व बिना तत्त्व नहीं, तत्त्व बिना सत्त्व नहीं।

(70)

शक्ति बिना भक्ति नहीं, भक्ति बिना शक्ति नहीं।

(71)

आधि में समाधि नहीं, समाधि में आधि नहीं।

(72)

धर्म में कर्म नहीं, कर्म में धर्म नहीं।

(73)

भेष में मार्ग नहीं, मार्ग में भेष नहीं।

(74)

मार्ग बिना भेष नहीं, भेष बिना मार्ग नहीं।

(75)

परसंग बिना विकार नहीं, विकार बिना परसंग नहीं।

(76)

निवृत्ति बिना वृत्ति नहीं, वृत्ति बिना निवृत्ति नहीं।

(77)

राग बिना दोष नहीं, दोष बिना क्लेश नहीं।

(78)

ज्ञान बिना भान नहीं, भान बिना ज्ञान नहीं।

(79)

विपाक बिना विकार नहीं, विकार बिना दोष नहीं।

(80)

दोष बिना बन्ध नहीं, बन्ध बिना विपाक नहीं।

(81)

खंड बिना मंड नहीं, मंड बिना खंड नहीं।

(82)

निमित्तनैमित्तिक योग में कर्तृकर्मत्व नहीं, कर्तृकर्मत्व में निमित्तनैमित्तिक योग नहीं।

(83)

सरागचारित्र हुए बिना वीतराग चारित्र नहीं, सरागचारित्र छूटे बिना वीतराग चारित्र नहीं।

आत्म-कीर्तन

हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम। ज्ञाता द्रष्टा आतम राम। ।।टेक।।
मैं वह हूँ, जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह रागवितान।।1।।
मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञाननिधान।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान।।2।।
सुख दुःख दाता कोइ न आन, मोह राग रुष दुःख की खान।
निज को निज पर को जान, फिर दुःख का नहीं लेश निदान।।3।।
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्यागि पहुंचूँ निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम।।4।।
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटो परकृत परिणाम, सहजानन्द रहूँ अभिराम।।5।।